पावक, पवन, मनिपन्नग पतंग पितृ,
जेते जोतिवंत तग ज्योतिषिन गाये हैं।

असुर प्रसिद्ध सिद्ध तीरथ सहित सिन्धु,
केसव चराचर जे वेदन बताये हैं।
अजर अमर अज अंगी औ अनंगी सब,
बरनि सुनावै ऐसे कौने गुन पाये हैं।
सीता के स्वयम्बर को रूप अवलोकिबे को,
भूषन कौ रूप धरि बिस्वरूप आये हैं॥29॥

शब्दार्थ—पावक = आग। पवन = हवा। मनिपन्नग = बड़े-बड़े सर्प अर्थात् शेषनाग, वासुकी इत्यादि। चराचर = चर और अचर अर्थात् जंगम और जड़। अजर = अविकृत। अज = जन्म न लेने वाले। अनंगी = अंग।

प्रसंग—इस छन्द में कवि ने बताया है कि सीता के स्वयम्वर की शोभा का वर्णन कोई भी नहीं कर सकता अर्थात् उसकी शोभा अवर्णनीय है।

व्याख्या—केशव कहते हैं कि आग, वायु बड़े-बड़े सर्प शेषनाग और बासुकी आदि तथा इसी प्रकार के अन्य (चन्द्र, सूर्य आदि) ज्योति वाले पदार्थ जिनका अस्तित्व ज्योतिषियों ने इस संसार में माना है; और राक्षस प्रसिद्ध सिद्ध, सागर तथा इसके समस्त तीर्थ, तथा वेदों में जितने भी चर तथा अचर पदार्थों का वर्णन है; और अजर, देवता, अज, अंगी और अंग सभी जितने तीनों लोकों के प्राणी हैं, उनमें से किसी में से ऐसे गुण नहीं हैं कि सीता के स्वयम्वर की शोभा का वर्णन करके सुना सकें (फिर मुझ जैसे साधारण कवि की तो गिनती ही क्या है?) इस विषय में तो केवल इतना कहा जा सकता है कि सीता के स्वयम्वर की शोभा देखने के लिए विश्व रूप ही राजाओं का रूप धारण करके आ गये हैं; अर्थात् सीता के स्वयम्वर में तीनों लोकों का सौंदर्य एकत्रित हो गया है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता है।

अलंकार—अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, अत्युक्ति।